

2-इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य-भाग २

अध्याय 1: विभीषिकाओं के अन्धकार से झाँकती प्रकाश किरणें सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: बीसवीं सदी में विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति के साथ-साथ मनुष्य के जीवन में क्या बढ़ा है?
◦ उत्तर: बीसवीं सदी में विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति के साथ-साथ मनुष्य के जीवन में तनाव, उद्विग्नता और मानसिक संक्षोभ-विक्षोभ भी बढ़े हैं।
2. प्रश्न: 'टाइम' पत्रिका ने सन् 1988 के लिए किसे "प्लनेट ऑफ द इयर" घोषित किया था और क्यों?
◦ उत्तर: 'टाइम' पत्रिका ने सन् 1988 के लिए पृथ्वी को "प्लनेट ऑफ द इयर" घोषित किया था, क्योंकि वह प्रदूषण के कारण संकटों से घिरी हुई थी।
3. प्रश्न: कुछ प्रसिद्ध भविष्यवक्ताओं के अनुसार, संकटों के बावजूद अंत में किसकी विजय होगी?
◦ उत्तर: नोस्ट्राडेमस, कीरो, जीन डीक्सन और महर्षि अरविन्द जैसे भविष्यवक्ताओं के अनुसार, संकटों के बावजूद अंत में दुर्बुद्धि पर सद्बुद्धि की विजय होगी और पृथ्वी पर सतयुगी व्यवस्था आएगी।
4. प्रश्न: वनों की कटाई से उत्पन्न होने वाले किन्हीं तीन संकटों के नाम बताइए।
◦ उत्तर: वनों की कटाई से वर्षा की कमी, भूक्षरण (भूमि का कटाव), और रेगिस्तानों का विस्तार जैसे संकट उत्पन्न हो रहे हैं।
5. प्रश्न: यौन क्षेत्र में स्वेच्छाचारिता के कारण कौन-सी असाध्य महामारी जन्मी है?
◦ उत्तर: यौन क्षेत्र में बरती गई स्वेच्छाचारिता और बढ़ती कामुकता ने 'एड्स' जैसी असाध्य महामारी को जन्म दिया है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, 'युग सन्धि' क्या है और इसका महत्व क्या है?
◦ उत्तर: 'युग सन्धि' बीसवीं सदी के समापन और इक्कीसवीं सदी के शुभारम्भ के बीच के बारह वर्षों की अवधि है। इसका महत्व यह है कि यह एक बड़े परिवर्तन का समय है, जिसमें एक पुरानी स्थिति समाप्त होती है और एक नई स्थिति का आगमन होता है, ठीक वैसे ही जैसे पतझड़ के बाद वसंत आता है।
2. प्रश्न: डॉ. एडगर मिचैल के अनुसार, हमारा भविष्य कैसे बनता है और आने वाला समय कैसा होगा?
◦ उत्तर: डॉ. एडगर मिचैल के अनुसार, जैसा हम आज सोचते और करते हैं, वही हमारा भविष्य बन जाता है। उनका कहना है कि आने वाले वर्ष नवयुग के अरुणोदय काल के होंगे, क्योंकि मानवता अब रचनात्मक दिशा में गम्भीरता से जुट रही है।

3. प्रश्न: औद्योगिक प्रदूषण के कौन-से दो मुख्य प्रभाव पर्यावरण पर पड़ रहे हैं और उनके संभावित परिणाम क्या हैं?

◦ उत्तर: औद्योगिक प्रदूषण के दो मुख्य प्रभाव हैं - कारखानों की चिमनियों से निकलता धुआँ हवा को और कारखानों का कचरा जलाशयों को दूषित कर रहा है। इसके संभावित परिणाम वायुमंडल में विषाक्तता का बढ़ना, अन्तरिक्ष का तापमान बढ़ना, ध्रुवों की बर्फ का पिघलना और तटीय शहरों का समुद्र में डूब जाना हो सकते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने निराशा को एक बड़ी विपदा क्यों कहा है? यह व्यक्ति और समाज की प्रगति को कैसे बाधित करती है?

◦ उत्तर: लेखक ने निराशा को एक बड़ी विपदा इसलिए कहा है क्योंकि यह समर्थ व्यक्ति को भी कुछ कर पाने में असमर्थ बना देती है, जिससे उसका मनोबल गिर जाता है। निराशा व्यक्ति की जीवनी शक्ति को खत्म कर देती है, तनाव बढ़ाती है, और रचनात्मक उपायों को सोचने से रोकती है। इससे व्यक्ति जीती हुई बाजी भी हार जाता है और प्रगति की कोई भी योजना क्रियान्वित नहीं हो पाती, जो अंततः समाज की प्रगति को भी बाधित करती है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार ने इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की अगवानी हेतु क्या सामूहिक प्रयास आरम्भ किया है और उसका उद्देश्य क्या है?

◦ उत्तर: शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार ने युग सन्धि के बारह वर्षों में संभावित प्रतिकूलताओं को निरस्त करने के लिए एक सामूहिक महापुरश्चरण आरम्भ किया है, जो सविता (सूर्य) के ध्यान और सद्बुद्धि की अवधारणा पर आधारित है। इसका उद्देश्य सभी धर्मों और मतों के लोगों को एकजुट करके विश्व भर के आशावादी मनीषियों और सृजनशिल्पियों का मनोबल बढ़ाना है, ताकि वे स्वर्णिम प्रभात की अगवानी के लिए तैयार हो सकें।

अध्याय 2: मानवी दुर्बुद्धि से ही उपजी हैं आज की समस्याएँ

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मनुष्य कर्म करने और फल पाने के मामले में स्वतंत्र है या परतंत्र?

◦ उत्तर: मनुष्य कर्म करने में तो स्वतंत्र है, लेकिन फल प्राप्त करने में वह सृष्टि के नियमों के बन्धनों में बँधा हुआ है।

2. प्रश्न: अपनत्व को सिकोड़ लेना और उसे व्यापक बनाना क्या कहलाता है?

◦ उत्तर: अपनत्व को सिकोड़ लेना 'क्षुद्रता' है और उसे व्यापक बनाकर चलना 'महानता' है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, अदूरदर्शिता की तुलना किस शारीरिक दोष से की गई है?

◦ उत्तर: लेखक ने अदूरदर्शिता की तुलना दृष्टि-दोष से की है, जिसमें व्यक्ति को सिर्फ नजदीक की वस्तु ही दिखाई देती है और दूर की नहीं।

4. प्रश्न: 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' का क्या अर्थ है?

◦ उत्तर: 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' का अर्थ है सभी प्राणियों में अपनी ही आत्मा को देखना, अर्थात् दूसरों के दुःख को अपना दुःख और दूसरों के सुख को अपना सुख मानना।

5. प्रश्न: अविवेकी व्यक्ति भीड़ में रहते हुए भी स्वयं को एकाकी अनुभव क्यों करता है?

◦ उत्तर: अविवेकी व्यक्ति अपनी प्रामाणिकता खो देता है और अविश्वस्त बन जाता है। सच्चे सहयोग के अभाव में वह भीड़ के बीच रहते हुए भी स्वयं को एकाकी अनुभव करता है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: बुरे कर्मों का फल तुरंत क्यों नहीं मिलता? लेखक के अनुसार इसके पीछे ईश्वर का क्या उद्देश्य हो सकता है?

◦ उत्तर: बुरे कर्मों का फल तुरंत इसलिए नहीं मिलता क्योंकि क्रिया की प्रतिक्रिया उत्पन्न होने में समय लगता है। लेखक के अनुसार, ईश्वर ने मनुष्य की समझदारी को जाँचने के लिए यह अवसर दिया है कि वह अपनी विवेक बुद्धि का उपयोग करके सही-गलत का निर्णय करे और सही मार्ग पर चले। इस परीक्षा में असफल होने वालों को दण्ड देर से मिलता है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार शोषण, उत्पीड़न और अनाचार जैसे जघन्य कृत्यों के मूल में कौन-सी वृत्ति काम करती है?

◦ उत्तर: इन जघन्य कृत्यों के मूल में संकीर्ण स्वार्थपरता और व्यक्तिवाद की वृत्ति काम करती है, जिसमें व्यक्ति को सिर्फ अपना लाभ दिखाई देता है और दूसरों के कष्ट और अहित की ओर उसका ध्यान ही नहीं जाता। इसमें दूसरों के प्रति सहानुभूति का पूर्ण अभाव होता है।

3. प्रश्न: आज समाज में प्रगति के बावजूद लोग दुःखी और असंतुष्ट क्यों हैं?

◦ उत्तर: समाज में सुविधा-साधनों की वृद्धि तो हुई है, लेकिन चिंतन, चरित्र और व्यवहार में निकृष्टता आ गई है। मनुष्य-मनुष्य के बीच अविश्वास और असहयोग का वातावरण है, जिसके कारण धनी-निर्धन, शिक्षित-अशिक्षित सभी अपने-अपने ढंग की कठिनाइयों से दुःखी और असंतुष्ट हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "मनुष्य भटका हुआ देवता है" - इस कथन का विश्लेषण करते हुए समझाएँ कि मनुष्य अपनी समस्याओं का कारण और निवारण स्वयं कैसे है?

◦ उत्तर: "मनुष्य भटका हुआ देवता है" का अर्थ है कि मनुष्य में ईश्वर की तरह सृजन और दिशा-बोध की

अपार क्षमताएँ हैं, लेकिन वह अदूरदर्शिता और अविवेक के कारण गलत रास्ते पर चला जाता है। वह तात्कालिक लाभ के लिए अपने कृत्यों के दूरगामी परिणामों को भूल जाता है, जिससे समस्याएँ पैदा होती हैं। इस प्रकार वह अपनी समस्याओं का कारण है। वहीं दूसरी ओर, यदि वह अपनी विवेक बुद्धि का प्रयोग करे, औचित्य को अपनाए और दिशा-बोध प्राप्त कर ले, तो वह सभी भटकावों का निराकरण कर सकता है। इस प्रकार वह अपनी समस्याओं का निवारण भी स्वयं ही है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, यदि मानवीय मर्यादा का पूर्ण रूप से पालन होने लगे, तो समाज में क्या परिवर्तन आएगा और यह कैसे संभव हो सकता है?

◦ उत्तर: यदि मानवीय मर्यादा का पूर्ण रूप से पालन होने लगे, तो कोई किसी के साथ अनीति बरतने की कल्पना भी मन में नहीं लाएगा। समाज में सेवा-सहायता और दुःख-सुख बाँटने की उदारता का भाव प्रबल होगा। यह तभी संभव हो सकता है जब मनुष्य 'आत्मवत् सर्व भूतेषु' की भाव संवेदना को हृदयंगम कर ले और अपनत्व की भावना को संकुचित न रखकर मनुष्य मात्र तक व्यापक बना ले।

अध्याय 3: निराशा हर स्थिति में हटे

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, किन लोगों को महामानव या देवदूत कहा जाता है?

◦ उत्तर: जो लोग आँधी-तूफानों के बीच भी अपनी आशा का दीपक जलाए रख सकते हैं और सुधार की संभावना के लिए अकेले ही साहस बनाए रखते हैं, उन्हें महामानव या देवदूत कहा जाता है।

2. प्रश्न: निराश व्यक्ति जीती हुई बाजी भी क्यों हार जाते हैं?

◦ उत्तर: निराश व्यक्ति जीत की संभावना को पहले ही नकार देते हैं, इसलिए वे जीती हुई बाजी भी हार जाते हैं।

3. प्रश्न: ग्वाल-बालों ने गोवर्धन पर्वत उठाने जैसा असंभव कार्य कैसे संभव कर दिखाया?

◦ उत्तर: ग्वाल-बालों के मन में यह विश्वास गहराई तक जम गया था कि वे गोवर्धन पर्वत उठा सकते हैं, और इसी विश्वास के बल पर वे कृष्ण के इस असंभव लगने वाले प्रयास को पूरा कर पाए।

4. प्रश्न: अर्जुन युद्ध करने के लिए कैसे तैयार हुए?

◦ उत्तर: भगवान कृष्ण ने अर्जुन को विश्वास दिलाया कि कौरव पहले ही मारे जा चुके हैं और उसे तो केवल निमित्त मात्र बनना है। कृष्ण के वचनों पर पूर्ण विश्वास करके अर्जुन मोह-मुक्त होकर युद्ध के लिए प्रवृत्त हो गए।

5. प्रश्न: बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तन कैसे सफल हुआ?

◦ उत्तर: बुद्ध ने तत्कालीन जनसमुदाय को उज्ज्वल भविष्य का विश्वास दिलाया, जिसे समझकर लाखों

लोग भिक्षु-भिक्षुणी बनकर उनके साथ हो लिए और इस तरह धर्मचक्र प्रवर्तन सफल हुआ।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने निराशा को घुन की तरह क्यों बताया है? यह व्यक्ति को आंतरिक रूप से कैसे कमजोर करती है?

◦ उत्तर: लेखक ने निराशा को घुन की तरह बताया है क्योंकि जैसे घुन एक मजबूत शहतीर को अंदर से खोखला कर देता है, वैसे ही निराशा व्यक्ति की जीवनी शक्ति को धीरे-धीरे खत्म कर देती है, उसे अंदर से तोड़ देती है, और उसकी सारी शक्तियों का अपहरण कर लेती है।

2. प्रश्न: इतिहास के उदाहरण (जैसे- हनुमान, जोन ऑफ आर्क, लेनिन, गाँधी) क्या सिद्ध करते हैं? इन सभी सफलताओं का साझा आधार क्या था?

◦ उत्तर: इतिहास के ये उदाहरण सिद्ध करते हैं कि यदि लोगों के मन में उज्ज्वल भविष्य और सफलता के प्रति गहरा विश्वास जगा दिया जाए, तो वे बड़े से बड़े और असंभव लगने वाले कार्यों को भी पूरा कर सकते हैं। इन सभी सफलताओं का साझा आधार जनमानस में जगाया गया अटूट विश्वास और उत्साह था।

3. प्रश्न: आज के समय में ध्वंस को सृजन में बदलने के लिए किस प्रकार का जनमानस तैयार करने की आवश्यकता है?

◦ उत्तर: आज ध्वंस को सृजन में बदलने के लिए ऐसा जनमानस तैयार करना होगा जो भय, आतंक और विनाश की मानसिकता से उबरे और परिवर्तन कर सकने की अपनी शक्ति पर विश्वास करे। लोगों के मन में यह विश्वास जगाना होगा कि औचित्य, अनौचित्य पर निश्चित ही विजय प्राप्त करेगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, "सोने के साथ सुगंध" जैसा सुयोग कब बन सकता है? इस कथन का आज के सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में क्या महत्व है?

◦ उत्तर: लेखक के अनुसार, जब तर्क, तथ्य और प्रमाणों के आधार पर उज्ज्वल भविष्य का विश्वास जगाने के साथ-साथ उसमें ईश्वर की इच्छा और महाकाल की प्रेरणा जैसी उच्च-स्तरीय मान्यता का पुट भी जोड़ दिया जाए, तब "सोने के साथ सुगंध" जैसा सुयोग बनता है। आज के संदर्भ में इसका महत्व यह है कि केवल भौतिक और तार्किक प्रयास ही पर्याप्त नहीं हैं; लोगों में आध्यात्मिक और भावनात्मक प्रेरणा जगाने से परिवर्तन की प्रक्रिया अधिक शक्तिशाली और प्रभावी हो सकती है।

2. प्रश्न: यदि इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल होने की बात लोगों के मन में गहराई से जम जाए, तो उसकी परिणति क्या होगी? यह सामाजिक व्यवहार को कैसे प्रभावित करेगी?

◦ उत्तर: यदि यह बात लोगों के मन में जम जाए, तो इसकी परिणति यह होगी कि लोग अनुचित को

छोड़ने और उचित को अपनाने में ही बुद्धिमत्ता समझेंगे। वे भविष्य की श्रेय-संभावनाओं का भागीदार बनने के लिए स्वयं आगे बढ़कर अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करने के लिए तत्पर होंगे। इससे सामाजिक व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन आएगा और लोग स्वार्थ से ऊपर उठकर परमार्थ के कार्यों में जुटेंगे।

अध्याय 4: अपने युग की असाधारण महाक्रान्ति

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: महाक्रान्ति किसे कहते हैं?

◦ उत्तर: जब किसी परिवर्तन में व्यापकता के साथ-साथ प्रवाह परिवर्तन भी जुड़ा होता है, तो ऐसी घटनाओं को महाक्रान्ति कहते हैं।

2. प्रश्न: महाभारत के आयोजन का लक्ष्य क्या था?

◦ उत्तर: महाभारत काल के आयोजन का लक्ष्य भारत को 'विशाल भारत' और 'महान भारत' बनाना था।

3. प्रश्न: अपने समय के महापरिवर्तन को किस नाम से जाना जा सकता है?

◦ उत्तर: अपने समय के महापरिवर्तन को "युगान्तर" के नाम से जाना जा सकता है।

4. प्रश्न: बीसवीं सदी में हुई सामाजिक क्रान्ति के दो प्रमुख परिणाम क्या थे?

◦ उत्तर: बीसवीं सदी की सामाजिक क्रान्ति के दो प्रमुख परिणाम थे- दास प्रथा की समाप्ति और स्त्री-शूद्र को बराबरी का सैद्धांतिक अधिकार मिलना।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, नीति और अनिति के युद्ध में अंततः किसकी विजय होनी निश्चित है?

◦ उत्तर: लेखक के अनुसार, इस युद्ध में अंततः सृजन ही जीतेगा और सत्य की ही विजय होनी है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: बीसवीं सदी में कौन-से बड़े राजनैतिक परिवर्तन हुए जिन्होंने विश्व का नक्शा बदल दिया?

◦ उत्तर: बीसवीं सदी में कई बड़े राजनैतिक परिवर्तन हुए। दो विश्व युद्धों ने अहंकारी शक्तियों को कमजोर कर दिया। भारत जैसी कई राजनैतिक पराधीनताएँ समाप्त हुईं। अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देश और छोटे-छोटे द्वीप स्वतंत्र हो गए, जिससे उपनिवेशवाद लगभग समाप्त हो गया।

2. प्रश्न: "बुझता हुआ दीपक पूरी लौ से उठता है" - इस उक्ति का प्रयोग लेखक ने वर्तमान परिस्थितियों के लिए क्यों किया है?

◦ उत्तर: लेखक ने इस उक्ति का प्रयोग यह समझाने के लिए किया है कि जैसे दीपक बुझने से पहले या रात खत्म होने से पहले अंधेरा और गहरा होता है, उसी प्रकार अनिति और अवांछनीयता भी अपने अंत से पहले चरम पर पहुँच गई है। वर्तमान में दिख रहा कोहराम और बिगाड़ उसी अंतिम संघर्ष का प्रतीक है, जिसके बाद सृजन और औचित्य का उदय निश्चित है।

3. प्रश्न: लेखक का यह क्यों मानना है कि महाक्रान्तियाँ सदा सृजन और सन्तुलन के लिए ही उभरती हैं?

◦ उत्तर: लेखक का मानना है कि पतन और पराभव तो सामान्य कुसंस्कारी वातावरण में स्वाभाविक रूप से होता रहता है, जैसे पानी ढलान की ओर बहता है। लेकिन महाक्रान्तियाँ एक विशेष उद्देश्य के साथ उभरती हैं ताकि असंतुलन को संतुलन में बदला जा सके। इसलिए उनका परिणाम हमेशा ऊर्ध्वगमन, उत्कर्ष और अभ्युदय के रूप में ही होता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने वर्तमान महाक्रान्ति को "पिछले समस्त परिवर्तनों की संयुक्त शक्ति का एकात्म समीकरण" क्यों कहा है? इसका विश्लेषण करें।

◦ उत्तर: लेखक ने ऐसा इसलिए कहा है क्योंकि वर्तमान परिवर्तन किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। यह राजनैतिक (उपनिवेशवाद का अंत), सामाजिक (दास प्रथा, जातिगत भेदभाव का अंत), वैचारिक (प्रजातंत्र, साम्यवाद का उदय) और मानवीय मूल्यों के हर स्तर पर हो रहा है। रामायण, महाभारत या बुद्ध के धर्मचक्र प्रवर्तन जैसे पिछले परिवर्तन किसी एक बड़े लक्ष्य पर केंद्रित थे, किन्तु वर्तमान महाक्रान्ति समग्र और वैश्विक है। यह मानव चेतना के हर पहलू को एक साथ प्रभावित कर रही है, इसलिए इसे सभी पिछली क्रान्तियों की संयुक्त शक्ति का समीकरण कहा गया है।

2. प्रश्न: "मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है" - इस कथन के बावजूद भविष्य के बारे में अनुमान लगाना क्यों महत्वपूर्ण है और यह कैसे संभव है?

◦ उत्तर: यद्यपि मनुष्य अपने कर्मों से भविष्य बदल सकता है, फिर भी भविष्य का अनुमान लगाना महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी आधार पर संसार की योजनाएँ बनती हैं और गतिविधियाँ चलती हैं। यह अनुमान लगाना संभव है क्योंकि किसी बड़े प्रवाह या तूफान की दिशा और गति को देखकर यह आँकलन किया जा सकता है कि वह वस्तुओं को किस ओर ले जाएगा। वर्तमान महाक्रान्ति के प्रवाह की दिशा सृजन और संतुलन की ओर है, इसलिए यह विश्वास किया जा सकता है कि भविष्य उज्ज्वल होगा।

अध्याय 5: चौथी शक्ति का अभिनव उद्भव

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, समाज में अब तक किन तीन शक्तियों की प्रभुता रही है?

◦ उत्तर: समाज में अब तक तीन शक्तियों की प्रभुता रही है: (1) बुद्धि बल (विज्ञान, साहित्य, कला), (2) शासन सत्ता (व्यवस्था, सुरक्षा), और (3) धन शक्ति (उद्योग, व्यवसाय)।

2. प्रश्न: नवयुग के अवतरण में किस चौथी शक्ति का उदय होगा?

◦ उत्तर: नवयुग के अवतरण में चौथी शक्ति "प्रखर प्रतिभा" का उदय होगा।

3. प्रश्न: "प्रखर प्रतिभा" से लेखक का क्या तात्पर्य है?

◦ उत्तर: "प्रखर प्रतिभा" से लेखक का तात्पर्य आदर्शवादी उत्कृष्टता से है। यह संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊपर उठी हुई होती है और इसमें आदर्शों के प्रति अनन्य निष्ठा होती है।

4. प्रश्न: देव मानव किन्हीं कहा गया है?

◦ उत्तर: सज्जन और समर्पित सन्त, जो कर्तव्य क्षेत्र में सैनिकों जैसा अनुशासन का पालन करते हैं, उन्हें देव मानव कहा गया है।

5. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सतयुग और नरक क्या हैं?

◦ उत्तर: "प्रखर प्रतिभा" से लेखक का तात्पर्य आदर्शवादी उत्कृष्टता से है। यह संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊपर उठी हुई होती है और इसमें आदर्शों के प्रति अनन्य निष्ठा होती है।

6. प्रश्न: देव मानव किन्हीं कहा गया है?

◦ उत्तर: सज्जन और समर्पित सन्त, जो कर्तव्य क्षेत्र में सैनिकों जैसा अनुशासन का पालन करते हैं, उन्हें देव मानव कहा गया है।

7. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सतयुग और नरक क्या हैं?

◦ उत्तर: श्रेष्ठ मनुष्यों का बाहुल्य ही सतयुग है, जिसे "स्वर्ग" भी कहते हैं। इसके विपरीत, दुर्बुद्धि का बाहुल्य और उसका व्यापक प्रचलन ही नरक है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: सामान्य प्रतिभा और प्रखर प्रतिभा में मुख्य अंतर क्या है?

◦ उत्तर: सामान्य प्रतिभा वाले व्यक्ति अपने बुद्धि-कौशल का उपयोग धन, यश या बड़प्पन जैसे निजी लाभों के लिए करते हैं। इसके विपरीत, प्रखर प्रतिभा वाले लोग संकीर्ण स्वार्थ से ऊपर उठकर लोक मंगल और सत्प्रवृत्ति संवर्धन जैसे आदर्शों के लिए काम करते हैं।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, इक्कीसवीं सदी में नई दुनिया बनाने के लिए प्रचुर मात्रा में प्रखर प्रतिभा का उफान क्यों आवश्यक है?

◦ उत्तर: इक्कीसवीं सदी में नई दुनिया बनाने जैसा कठिन कार्य करने के लिए यह आवश्यक है क्योंकि पिछली एक शताब्दी में दुर्बुद्धि ने समाज में प्रदूषण, युद्ध, अपराध और भ्रष्टाचार जैसे अनेक अनर्थ किए हैं। इन समस्याओं को सुलझाने और नव-सृजन के लिए एक विशाल सृजन-सेना की आवश्यकता होगी, जो प्रखर प्रतिभा के उभार से ही संभव है।

3. प्रश्न: "आँधी-तूफान आने पर पत्ते, तिनके और धूलिकण भी आकाश तक जा पहुँचते हैं।" - इस कथन का प्रयोग लेखक ने किस संदर्भ में किया है?

◦ उत्तर: लेखक ने इस कथन का प्रयोग यह समझाने के लिए किया है कि जब इक्कीसवीं सदी में दैवी प्रेरणा का अदृश्य प्रवाह आएगा, तो साधारण क्षमता वाले लोग भी उससे प्रेरित होकर नव-सृजन के महान कार्यों में जुट जाएंगे और असाधारण परिणाम प्रस्तुत करेंगे।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक का यह क्यों मानना है कि नवयुग की अधिष्ठात्री "चौथी शक्ति" अर्थात् प्रखर प्रतिभा ही होगी?

◦ उत्तर: लेखक का मानना है कि बुद्धि, सत्ता और धन जैसी पहली तीन शक्तियाँ जब स्वार्थ से प्रेरित होती हैं तो वे प्रगति के साथ-साथ विनाश (जैसे विश्व युद्ध, प्रदूषण) का कारण भी बनती हैं। नवयुग का आधार सृजन, आदर्श और परमार्थ होगा। यह तभी संभव है जब लोगों में स्वार्थ से ऊपर उठकर लोक-मंगल के लिए कार्य करने की भाव-संवेदना (प्रखर प्रतिभा) जागे। इसलिए, समाज को सही दिशा देने वाली और नव-सृजन को संभव बनाने वाली यह चौथी शक्ति ही नवयुग की अधिष्ठात्री होगी।

2. प्रश्न: "सीप में जल की एक बूँद ही मोती उत्पन्न कर देती है, पर रेत में गिरने पर वह अपना अस्तित्व ही गँवा बैठती है।" इस उदाहरण के माध्यम से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

◦ उत्तर: इस उदाहरण के माध्यम से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि स्वाध्याय और सत्संग जैसी प्रेरणाएँ केवल उन्हीं लोगों पर गहरा प्रभाव डालती हैं जिनके अंदर पहले से ही भाव-संवेदनाएँ जीवित होती हैं। जैसे मोती बनाने की क्षमता सीप में होती है, वैसे ही आदर्शों को ग्रहण करने की क्षमता भावनाशील व्यक्ति में होती है। जिनके अंदर यह भाव नहीं है, उन पर उपदेशों का कोई स्थायी असर नहीं होता, ठीक वैसे ही जैसे रेत पर गिरी पानी की बूँद व्यर्थ हो जाती है।

अध्याय 6: चार चरण वाला युग-धर्म

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी के युग-धर्म के चार चरण कौन-से होंगे?

◦ उत्तर: इक्कीसवीं सदी के युग-धर्म के चार चरण होंगे: (1) समझदारी, (2) ईमानदारी, (3) जिम्मेदारी, और (4) बहादुरी।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार 'नासमझी' क्या है?

◦ उत्तर: तुरंत का लाभ देखकर उस पर टूट पड़ना और उसके साथ जुड़े भविष्य के दुष्परिणामों को न समझ पाना ही 'नासमझी' है।

3. प्रश्न: 'ईमानदारी' की समग्र परिभाषा क्या है?

◦ उत्तर: दूसरों से अपने लिए जिस प्रकार के व्यवहार की आशा करते हैं, वैसे ही व्यवहार दूसरों के साथ करना 'ईमानदारी' की समग्र परिभाषा है।

4. प्रश्न: मनुष्य पर अपने निजी जीवन के अलावा और कौन-सी जिम्मेदारी है?

◦ उत्तर: निजी जीवन के अलावा मनुष्य पर सामाजिक क्षेत्र में उच्चस्तरीय भूमिका निभाने की जिम्मेदारी है, जिसे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की मान्यता में देखा जा सकता है।

5. प्रश्न: बहादुरी का अर्वाचीन (आधुनिक) अर्थ क्या है?

◦ उत्तर: बहादुरी का आधुनिक अर्थ ऐसे पराक्रम करना है, जिससे अपनी महानता उभरे और समय, समाज तथा संस्कृति की छवि निखरे।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक ने आज की अधिकांश समस्याओं का मूल कारण 'नासमझी' को क्यों बताया है?

◦ उत्तर: लेखक ने 'नासमझी' को मूल कारण इसलिए बताया है क्योंकि लोग अपने कृत्यों के दूरगामी परिणामों पर विचार नहीं करते। वे तात्कालिक लाभ के लिए असंयम, अहंकार और भ्रष्ट आचरण अपनाते हैं, जिससे उनकी प्रामाणिकता खत्म हो जाती है और अंततः वे व्यक्तिगत एवं सामाजिक संकटों को जन्म देते हैं।

2. प्रश्न: "मनुष्य स्वतंत्र होते हुए भी अनेक उत्तरदायित्वों से बँधा है।" इस कथन से लेखक किन-किन जिम्मेदारियों की ओर संकेत कर रहे हैं?

◦ उत्तर: इस कथन से लेखक शरीर को स्वस्थ रखने, मन को संतुलित रखने, आर्थिक मर्यादा का पालन करने तथा परिवार को सुसंस्कृत बनाने जैसी व्यक्तिगत जिम्मेदारियों की ओर संकेत कर रहे हैं। इसके साथ ही, वे सृष्टि को सुव्यवस्थित और समुन्नत बनाने की सामाजिक जिम्मेदारी की ओर भी संकेत करते हैं, जिसे पूरा करके ही मनुष्य देव-मानव बन सकता है।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सच्चे अर्थों में शूरवीर कौन है?

◦ उत्तर: लेखक के अनुसार, सच्चे अर्थों में शूरवीर वह व्यक्ति है जो निकृष्ट प्रवाह, बुरे कुसंग और अवांछनीय वातावरण जैसे दबावों का सामना करते हुए भी स्वयं को उच्चस्तरीय आदर्शवादिता अपनाने के लिए तत्पर रखता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक यह क्यों कहते हैं कि 'समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी' के चार चरणों में ही उत्कृष्टता के समस्त सिद्धांतों का समावेश हो जाएगा और यह युग समस्याओं का समाधान कैसे करेगा?

◦ उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि ये चार गुण मानव के चिंतन, चरित्र और व्यवहार के हर पहलू को समेट लेते हैं।

▪ समझदारी दूरदर्शिता पैदा करेगी, जिससे लोग तात्कालिक लाभ के बजाय दीर्घकालिक कल्याण पर ध्यान देंगे।

- ईमानदारी पारस्परिक व्यवहार में न्याय और सद्भाव लाएगी।
- जिम्मेदारी व्यक्ति को अपने और समाज के प्रति कर्तव्यों का बोध कराएगी।
- बहादुरी सत्प्रवृत्तियों को बढ़ाने और दुष्प्रवृत्तियों से लड़ने का साहस देगी। जब ये चारों गुण समाज में प्रतिष्ठित हो जाएँगे, तो भ्रष्टाचार, शोषण, स्वार्थपरता और अनाचार जैसी समस्याएँ स्वतः समाप्त हो जाएँगी, जिससे युग की समस्याओं का समाधान संभव होगा।

2. प्रश्न: यदि कोई व्यक्ति बेईमानी का शिकार होता है, तो लेखक उसे क्या करने की सलाह देते हैं? क्या वे बदले में बेईमानी करने की अनुमति देते हैं?

◦ उत्तर: लेखक सलाह देते हैं कि यदि कोई बेईमानी का शिकार होता है, तो उसे उस कुचक्र से स्वयं को बचाना चाहिए। साथ ही, अनीति करने वालों को समझाने से लेकर प्रताड़ित करने तक की नीति अपनानी चाहिए। लेकिन वे स्पष्ट रूप से कहते हैं कि बदले में वैसा ही व्यवहार नहीं करना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से व्यक्ति स्वयं भी उसी गिरे हुए स्तर पर उतर आएगा। वे ईमानदारी को हर परिस्थिति में बनाए रखने पर जोर देते हैं।

अध्याय 7: अगली शताब्दी का अधिष्ठाता—सूर्य

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: पृथ्वी पर जीवन और सौन्दर्य का मुख्य भौतिक कारण क्या है?

◦ उत्तर: पृथ्वी पर जीवन और सौन्दर्य का मुख्य भौतिक कारण सूर्य से उसकी सही और संतुलित दूरी है।

2. प्रश्न: सूर्य के आध्यात्मिक स्वरूप को क्या कहते हैं और वह क्या प्रदान करने में सक्षम है?

◦ उत्तर: सूर्य के आध्यात्मिक स्वरूप को 'सविता' कहते हैं। यह अन्तःकरण में प्रेरणा, प्रकाश, साहस और उत्साह जैसे गुण प्रदान करने में सक्षम है।

3. प्रश्न: गायत्री मंत्र किस देवता का मंत्र है?

◦ उत्तर: गायत्री मंत्र सूर्य का मंत्र है। इसे सावित्री-सविता महामंत्र भी कहा जाता है।

4. प्रश्न: कुन्ती ने किस शक्ति का आवाहन करके सूर्य पुत्र कर्ण को जन्म दिया था?

◦ उत्तर: कुन्ती ने सूर्य की चेतना शक्ति 'सविता' का आवाहन करके सूर्य पुत्र कर्ण को जन्म दिया था।

5. प्रश्न: लेखक ने सर्वजनीन उपासना के लिए प्रतिदिन कितने मिनट ध्यान करने का सुझाव दिया है?

◦ उत्तर: लेखक ने प्रतिदिन पंद्रह मिनट ध्यान करने का सुझाव दिया है, ताकि यह नियम सभी के लिए साधना संभव हो सके।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: आर्थर कोस्लर के अनुसार, अणु आयुधों से उत्पन्न रेडियोधर्मिता से कैसे जूझा जा सकता है?

◦ उत्तर: आर्थर कोस्लर के अनुसार, अणु आयुधों से भी बढ़कर सामर्थ्य गायत्री मंत्र में है। जब विश्व के करोड़ों लोग गायत्री मंत्र का समवेत उच्चारण करेंगे, तो उससे उत्पन्न ऊर्जा ब्रह्मांड में सूर्य को भेदकर आणविक शक्ति को नष्ट कर सकती है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, अगले दिनों में सूर्य विज्ञान को क्यों प्रमुखता प्राप्त होगी?

◦ उत्तर: अगले दिनों में सूर्य विज्ञान को प्रमुखता मिलेगी क्योंकि इसका उपयोग न केवल ऊर्जा जैसी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए होगा, बल्कि मानव प्रकृति में परिष्कार और मानसोपचार के लिए भी किया जाएगा। सूर्य की शक्ति से शरीर, मन और भाव संवेदनाओं को उच्चस्तरीय लाभ पहुँचाने वाली शोधों को प्रमुखता मिलेगी।

3. प्रश्न: लेखक द्वारा बताई गई सूर्य की सार्वजनीन उपासना विधि का वर्णन करें।

◦ उत्तर: यह उपासना ब्रह्म मुहूर्त में की जानी है। इसमें साधक आँखें बंद करके उगते हुए सुनहरे सूर्य का ध्यान करता है। वह भावना करता है कि सूर्य की किरणें उसके शरीर में प्रवेश कर रही हैं और उसका शरीर चन्द्रमा की तरह अमृत ज्योति से भर गया है। फिर यह ज्योति पूरे संसार में फैलकर एक उपयोगी और सकारात्मक वातावरण बना रही है। इस ध्यान के साथ गायत्री मंत्र का मानसिक जप भी किया जा सकता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "सूर्य आत्मा जगतः तस्थुषच" - इस कथन का वैज्ञानिक और आध्यात्मिक दोनों दृष्टिकोणों से विश्लेषण करें।

◦ उत्तर:

▪ **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:** इस कथन का अर्थ है कि सूर्य ही जगत की आत्मा है। वैज्ञानिक रूप से, पृथ्वी पर समस्त जीवन और ऊर्जा का स्रोत सूर्य ही है। सूर्य की किरणों से ही वनस्पतियाँ प्रकाश संश्लेषण करती हैं, मौसम चक्र चलता है, और सभी प्राणियों को जीवनी शक्ति मिलती है। सूर्य के बिना पृथ्वी पर जीवन संभव नहीं है, इसलिए वह इस जगत का प्राण या 'आत्मा' है।

▪ **आध्यात्मिक दृष्टिकोण:** आध्यात्मिक रूप से, सूर्य केवल एक अग्नि पिंड नहीं, बल्कि एक सचेतन प्राण शक्ति 'सविता' है। यह साधक के अंतःकरण को प्रेरणा, तेज, साहस और सद्बुद्धि से भर देता है। जिस प्रकार आत्मा शरीर को चेतना देती है, उसी प्रकार सविता इस जगत को आध्यात्मिक चेतना और ऊर्जा प्रदान करता है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में चलाए जा रहे युग सन्धि महापुरश्चरण का उद्देश्य क्या है और यह सूर्य की शक्ति से कैसे जुड़ा है?

◦ उत्तर: युग सन्धि महापुरश्चरण का उद्देश्य नवयुग में जन मानस को परिष्कृत करने के लिए प्रखर प्रतिभा

का संवर्धन करना है। यह सूर्य की शक्ति से सीधे जुड़ा है क्योंकि यह साधना सूर्य के आध्यात्मिक स्वरूप 'सविता' पर केंद्रित है। इस सामूहिक अनुष्ठान के माध्यम से लाखों-करोड़ों लोगों की संयुक्त चेतना से सूर्य के चेतना पक्ष का आवाहन किया जा रहा है, ताकि वह मनुष्य समाज पर अधिक अनुग्रह बरसाए और नव-सृजन के लिए आवश्यक चेतना शक्ति प्रदान करे।

अध्याय 8: महाकाल की संकल्पित सम्भावनाएँ

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, जब अदृश्य प्रगति प्रवाह की इच्छा शक्ति जुड़ जाती है तो क्या होता है?

◦ उत्तर: जब अदृश्य प्रगति प्रवाह की इच्छा शक्ति जुड़ जाती है, तो परिवर्तन इतनी तेजी से होते हैं कि आश्चर्य होता है और सहस्राब्दियों में होने वाला काम दशाब्दियों या वर्षों-महीनों में ही सम्पन्न होने लगता है।

2. प्रश्न: पिछले कुछ समय में विज्ञान की प्रगति के कोई तीन उदाहरण दीजिए।

◦ उत्तर: विज्ञान की प्रगति के तीन उदाहरण हैं - रेल, मोटर, बिजली का विस्तार, अन्तरिक्ष में उपग्रहों का चक्कर काटना, और रेडियो-टेलीविजन का आविष्कार।

3. प्रश्न: मई 1989 में ग्राम पंचायतों के सम्बन्ध में क्या महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ था?

◦ उत्तर: मई 1989 में ग्राम पंचायतों को विशेष अधिकार देने की बात बनी, जिससे गाँधीजी का ग्रामीण स्वराज्य का सपना साकार होने की दिशा में एक बड़ा कदम उठा।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, शिक्षा के क्षेत्र में प्रौढ़ शिक्षा की समस्या का समाधान कैसे निकलेगा?

◦ उत्तर: इस समस्या का समाधान तब निकलेगा जब शिक्षितों को अपने समीप के एक-दो अशिक्षितों को साक्षर बनाने के लिए बाधित होना पड़ेगा।

5. प्रश्न: लेखक ने आने वाली क्रान्तियों की तुलना किससे की है?

◦ उत्तर: लेखक ने आने वाली क्रान्तियों की तुलना रेलगाड़ी के डिब्बों से की है, जो एक के पीछे एक दौड़ते चले आ रहे हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, 'सहकारिता क्रान्ति' का मुख्य उद्देश्य क्या होगा और यह समाज में किस बड़ी समस्या का समाधान करेगी?

◦ उत्तर: 'सहकारिता क्रान्ति' का मुख्य उद्देश्य अर्थ व्यवस्था को सहकारिता के आधार पर चलाना होगा। यह समाज की उस बड़ी समस्या का समाधान करेगी जिसमें बिचौलिए या मध्यस्थ विकास योजनाओं का एक बड़ा हिस्सा (९४ प्रतिशत तक) हड़प जाते हैं और लाभार्थी तक बहुत कम पहुँचता है। इससे भ्रष्टाचार पर अंकुश लगेगा।

2. प्रश्न: "हराम की कमाई" के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में क्या परिवर्तन आएगा और इसका समाज पर क्या प्रभाव पड़ेगा?

◦ उत्तर: "हराम की कमाई" खाने वालों को अपराधी माना जाएगा और उनका तिरस्कार किया जाएगा, जबकि परिश्रम करने वालों को पुण्यात्मा मानकर सम्मान दिया जाएगा। इसका प्रभाव यह होगा कि दहेज प्रथा, अपव्यय और अहंकार जैसी सामाजिक बुराइयों की जड़ें कट जाएँगी और कामचोरी को सबसे बुरा माना जाने लगेगा।

3. प्रश्न: लेखक ने भारत की स्वतंत्रता, जमींदारी उन्मूलन और दास प्रथा की समाप्ति जैसे परिवर्तनों का उल्लेख क्यों किया है? वे इसके माध्यम से क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

◦ उत्तर: लेखक ने इन बड़े और तेजी से हुए ऐतिहासिक परिवर्तनों का उल्लेख यह सिद्ध करने के लिए किया है कि जब महाकाल या नियति का संकल्प होता है तो सदियों पुरानी परम्पराएँ भी बहुत कम समय में बदल जाती हैं। वे यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वर्तमान की समस्याओं का समाधान भी इसी तरह की एक अदृश्य शक्ति द्वारा तेजी से किया जाएगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "इस कोयले की खदान में ही बहुमूल्य मणिमुक्तक उभरते और चमकते दिखाई देंगे।" - इस कथन का विश्लेषण करें। लेखक ने 'कोयले की खदान' और 'मणिमुक्तक' का प्रयोग किनके लिए किया है और इसका युग परिवर्तन के सन्दर्भ में क्या महत्व है?

◦ उत्तर: इस कथन में, 'कोयले की खदान' का प्रयोग वर्तमान के साधारण, समस्याओं से ग्रस्त और पतनशील समाज के लिए किया गया है। 'बहुमूल्य मणिमुक्तक' का प्रयोग उन प्रखर प्रतिभाओं और देवमानवों के लिए किया गया है जो इसी साधारण समाज से उभरकर सामने आएँगे। युग परिवर्तन के सन्दर्भ में इसका महत्व यह है कि लेखक यह विश्वास दिलाना चाहते हैं कि बाहर से भले ही समाज अंधकारमय और निराश लगे, लेकिन इसी के भीतर से वे महान आत्माएँ निकलेंगी जो प्रतिभा परिष्कार के माध्यम से नवयुग का निर्माण करेंगी। यह परिवर्तन किसी बाहरी शक्ति द्वारा नहीं, बल्कि समाज के अपने ही जागृत लोगों द्वारा लाया जाएगा।

2. प्रश्न: महाकाल की संकल्पित योजनाओं के अंतर्गत राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में कौन-सी तीन प्रमुख क्रान्तियाँ होने की संभावना बताई गई है? ये तीनों आपस में किस प्रकार जुड़ी हुई हैं?

◦ उत्तर: महाकाल की योजनाओं के अंतर्गत तीन प्रमुख क्रान्तियाँ हैं:

1. राजनैतिक क्रान्ति: पंचायत राज की स्थापना, जिससे सत्ता आम और पिछड़े लोगों के हाथों में आएगी।

2. **आर्थिक क्रान्ति:** सहकारिता आन्दोलन, जो बिचौलियों को खत्म कर आर्थिक भ्रष्टाचार पर लगाम लगाएगा।

3. **सामाजिक-शैक्षणिक क्रान्ति:** प्रौढ़ शिक्षा और श्रम को सम्मान, जिससे समाज में व्याप्त अशिक्षा और कामचोरी जैसी बुराइयाँ समाप्त होंगी। ये तीनों आपस में गहराई से जुड़ी हैं। राजनैतिक शक्ति जब अशिक्षित और पिछड़े लोगों के हाथ में आएगी (पंचायत राज), तो उन्हें शिक्षित करना (प्रौढ़ शिक्षा) अनिवार्य हो जाएगा ताकि वे अपनी जिम्मेदारी निभा सकें। साथ ही, आर्थिक व्यवस्था को पारदर्शी (सहकारिता) बनाने से जो संसाधन बचेंगे, वे वास्तविक विकास कार्यों में लगेंगे और एक न्यायपूर्ण समाज का निर्माण होगा जहाँ परिश्रम को सम्मान मिलेगा।

अध्याय 9: परिवर्तन प्रक्रिया का सार-संक्षेप

सरल स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** लेखक के अनुसार, बीसवीं सदी कुल मिलाकर 'घाटे की' क्यों रही?

◦ **उत्तर:** बीसवीं सदी 'घाटे की' रही क्योंकि इसमें प्रगति और निर्माण कम हुआ, जबकि विनाश और बिगाड़ ज़्यादा हुआ, जैसे- दो विश्व युद्ध, बढ़ा हुआ असंयम, अनाचार और प्रकृति का प्रकोप।

2. **प्रश्न:** 'युग सन्धि' का समय कब से कब तक माना गया है और इसकी तुलना किससे की गई है?

◦ **उत्तर:** 'युग सन्धि' का समय बीसवीं सदी के अंतिम बारह वर्षों (सन् 1989 से 2000 तक) को माना गया है। इसकी तुलना रात्रि की विदाई और प्रभात के आगमन के बीच की 'ऊषाकाल' या 'ब्रह्म मुहूर्त' से की गई है।

3. **प्रश्न:** नवयुग के समुद्र मंथन में 'मथनी' और 'रस्सी' की भूमिका कौन निभाएगा?

◦ **उत्तर:** नवयुग के समुद्र मंथन में 'मन्दराचल पर्वत' जैसी मथनी की भूमिका प्रकृति निभाएगी और 'वासुकि सर्प' जैसी रस्सी की भूमिका मानवी उत्साह निभाएगा।

4. **प्रश्न:** अगली शताब्दी (इक्कीसवीं सदी) में नर-नारी समानता का क्या परिणाम होगा?

◦ **उत्तर:** जब नर और नारी एक समान बनकर रहेंगे तो उपेक्षित पड़ी आधी जनसंख्या (नारी) के सक्रिय होने से कुल जनशक्ति दोगुनी हो जाएगी।

5. **प्रश्न:** लेखक के अनुसार, विज्ञान का उपयोग भविष्य में किस दिशा में होगा?

◦ **उत्तर:** भविष्य में विज्ञान का उपयोग युद्ध के साधनों की प्रतिस्पर्धा में न होकर ग्राम्य विकास, कुटीर उद्योग और प्रदूषण जैसी समस्याओं के समाधान की दिशा में होगा।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** "हम बदलेंगे, युग बदलेगा" - इस आदर्श को कौन लोग प्रस्तुत करेंगे और नवयुग के अवतरण में उनकी क्या भूमिका होगी?

◦ उत्तर: इस आदर्श को वे सुसंस्कारी नर-नारी प्रस्तुत करेंगे जिनमें "प्रखर प्रतिभा" यानी आदर्शवादी उमंग जागेगी। नवयुग के अवतरण में उनकी भूमिका चौथी शक्ति के रूप में होगी जो राजशक्ति, बुद्धिशक्ति और धनशक्ति को सही दिशा देगी और समाज में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी तथा बहादुरी जैसे मानवीय मूल्यों की स्थापना करेगी।

2. प्रश्न: युग सन्धि के दौरान "गलाई और ढलाई" की प्रक्रिया का क्या अर्थ है?

◦ उत्तर: "गलाई और ढलाई" की प्रक्रिया का अर्थ है कि इस काल में दो परस्पर विरोधी दिखने वाली क्रियाएँ एक साथ चलेंगी। एक ओर अवांछनीयता का उन्मूलन (गलाई) होगा, यानी पुरानी गलत व्यवस्थाएँ और विचार नष्ट होंगे। दूसरी ओर, नवसृजन का भव्य प्रवाह (ढलाई) आएगा, यानी नई और अच्छी व्यवस्थाओं का निर्माण होगा।

3. प्रश्न: इक्कीसवीं सदी की दो प्रधान वैज्ञानिक उपलब्धियाँ क्या होंगी और वे किन बड़ी समस्याओं का समाधान करेंगी?

◦ उत्तर: इक्कीसवीं सदी की दो प्रधान वैज्ञानिक उपलब्धियाँ होंगी - (1) समुद्री जल को पीने योग्य बनाना और (2) ऊर्जा के लिए सूर्य शक्ति का उपयोग करना। ये उपलब्धियाँ भविष्य की दो सबसे बड़ी समस्याओं का समाधान करेंगी: पीने के पानी की कमी और ऊर्जा संकट। साथ ही, इससे रेगिस्तानों को भी उपजाऊ बनाया जा सकेगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, नवयुग के निर्माण का वास्तविक श्रेय किसे मिलेगा और प्रकट रूप में यह श्रेय किन्हें प्राप्त होगा? इस व्यवस्था में अदृश्य और दृश्य शक्तियों की भूमिका का विश्लेषण करें।

◦ उत्तर: इस परिवर्तन का वास्तविक श्रेय 'अदृश्य वातावरण के नियन्ता' यानी महाकाल या दैवी सत्ता को मिलेगा। परन्तु, प्रकट रूप में यह श्रेय उन जागृत मनुष्यों, देवमानवों, मूर्धन्यों और संस्था-संगठनों को मिलेगा जो इस सृजन कार्य में अपनी-अपनी भूमिका निभाएँगे। इसमें अदृश्य शक्ति (महाकाल/दैवी प्रेरणा) एक प्रेरक और व्यवस्थापक की भूमिका निभाती है, जो परिवर्तन का संकल्प करती है और अनुकूल वातावरण बनाती है। दृश्य शक्तियाँ (प्रखर प्रतिभा वाले मनुष्य) उस प्रेरणा को ग्रहण कर उसे धरती पर क्रियान्वित करती हैं और युग सृजेता के रूप में ऐतिहासिक भूमिका निभाकर परिवर्तन को साकार करती हैं।

2. प्रश्न: परिवर्तन प्रक्रिया के सार-संक्षेप के आधार पर, इक्कीसवीं सदी के समाज की एक व्यापक तस्वीर प्रस्तुत करें, जिसमें राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर होने वाले मुख्य बदलाव शामिल हों।

◦ उत्तर: इक्कीसवीं सदी के समाज की तस्वीर इस प्रकार होगी:

- राजनैतिक स्तर पर: युद्धोन्माद शांत होगा और विश्व में शांति-सहयोग का वातावरण बनेगा। सत्ता

बड़े शहरों और केन्द्रों से हटकर गाँवों और कस्बों तक पहुँचेगी (ग्राम्य विकास)।

- **आर्थिक स्तर पर:** बड़े कारखानों की जगह कुटीर उद्योग लेंगे। व्यक्तिवादी संकीर्ण स्वार्थपरता की जगह समाज निष्ठा और परमार्थ को महत्व मिलेगा, जिससे आर्थिक विषमता घटेगी।

- **सामाजिक स्तर पर:** नर-नारी की समानता स्थापित होगी, जिससे जनशक्ति दोगुनी हो जाएगी। जाति, भाषा, क्षेत्र के नाम पर भेदभाव मिटेगा और 'एक धर्म, एक जाति' जैसी मान्यता प्रबल होगी। साहित्य और कला का उपयोग समाज को परिष्कृत करने के लिए होगा।

- **व्यक्तिगत स्तर पर:** मनुष्य का चिंतन, चरित्र और व्यवहार बदलेगा। वह मर्यादित जीवन जिएगा और 'समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, बहादुरी' को अपने जीवन का आधार बनाएगा। स्वार्थ के स्थान पर परमार्थ की भावना प्रबल होगी।

संकलित परिभाषाएँ:

- **क्रान्ति** - जब कोई बड़ा परिवर्तन, व्यापक क्षेत्र में तीव्र गति से होता है, तो उसे क्रान्ति कहते हैं।
- **युग सन्धि** - बीसवीं सदी के समापन व इक्कीसवीं सदी के शुभारम्भ वाले बारह वर्षों को सन्धि बेला कहकर पुकारा गया है, जिसमें एक स्थिति जाती है और दूसरी आती है। यह रात्रि की विदाई और प्रभात के आगमन के बीच का समय है, जिसे ऊषाकाल या ब्रह्म मुहूर्त भी कहते हैं।
- **अपनत्व को सिकोड़ लेना** - यह क्षुद्रता है।
- **अपनत्व को व्यापक बनाकर चलना** - यह महानता है, यही आत्म-विकास है।
- **महाक्रान्तियाँ** - वे घटनाएँ जिनमें व्यापकता के साथ-साथ प्रवाह परिवर्तन भी जुड़ा होता है, महाक्रान्तियाँ कहलाती हैं। ये केवल सृजन और सन्तुलन के लिए ही उभरती हैं।
- **युगान्तर** - अपने समय के महापरिवर्तन को "युगान्तर" के नाम से जाना जा सकता है।
- **प्रखर प्रतिभा** - यह आदर्शवादी उत्कृष्टता से युक्त एक शक्ति है। यह संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँची उठी होती है और इसमें आदर्शों के प्रति अनन्य निष्ठा का समावेश रहता है। इसे भाव सम्बेदनाओं से भरी पूरी आदर्शवादी उमंग भी कह सकते हैं।
- **देव मानव** - सज्जन और समर्पित सन्त, जो कर्तव्य क्षेत्र में सैनिकों जैसा अनुशासन पालन करते हैं, देव मानव कहलाते हैं।
- **समझदारी (युग-धर्म के सन्दर्भ में)** - अपने कृत्यों के दूरगामी परिणामों को ध्यान में रखकर कार्य करना।
- **नासमझी** - तुरन्त का लाभ देखकर उस पर टूट पड़ना और उसके साथ जुड़े हुए भविष्य के दुष्परिणामों को न समझ पाना ही नासमझी है।
- **ईमानदारी** - दूसरों से अपने लिए जिस प्रकार के व्यवहार की आशा करते हैं, वैसा ही व्यवहार दूसरों के साथ करना।
- **बेईमानी** - जो व्यवहार अपने को बुरा लगता है, उसी का आचरण दूसरे के साथ किया जाए तो इसे बेईमानी कहना होगा।
- **जिम्मेदारी** - मनुष्य स्वतंत्र होते हुए भी अनेक उत्तरदायित्वों और अनुशासनों से बँधा है, जैसे- शरीर, मन, परिवार और समाज के प्रति कर्तव्यों का निर्वहन।
- **बहादुरी** - ऐसे पराक्रम कर गुजरना, जिससे अपनी महानता उभरती है और समय, समाज तथा संस्कृति की छवि निखरती है।
- **सविता** - सूर्य का आध्यात्मिक स्वरूप, जो अन्तःकरण में प्रेरणा, प्रकाश, साहस और उत्साह दे सकने में सक्षम है।

- सतयुग - श्रेष्ठ मनुष्यों का बाहुल्य ही सतयुग है, जिसे "स्वर्ग" भी कहते हैं।
- नरक - दुर्बुद्धि का बाहुल्य और उसी का व्यापक प्रचलन ही नरक है।
- ईश्वर की विभूति - मानवी पराक्रम व भविष्य को बदल देने की उसकी सामर्थ्य, मनुष्य को प्राप्त एक विभूति है।
- मानवीय मर्यादा - कोई किसी के साथ अनीति बरतने की कल्पना भी मन में न उठने दे।
- गायत्री मंत्र - यह सूर्य का मंत्र है। यह सावित्री-सविता महामंत्र है।